

कुतुबुद्दीन ऐबक का इतिहास और स्थापत्य कला | TGT, PGT, NET & Assistant Professor Notes

1. प्रस्तावना एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सन 1192 ई० में तराइन के द्वितीय युद्ध में मोहम्मद गौरी की निर्णायक विजय (पृथ्वीराज चौहान तृतीय की पराजय) तथा भारत में राजनीतिक सत्ता परिवर्तन के फलस्वरूप 1206 ई० में दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई थी। दिल्ली का पहला तुर्क शासक कुतुबुद्दीन ऐबक ही था। उसी को भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक भी माना जाता है। मुहम्मद गौरी ने भारतीय प्रदेशों को जीतकर उन्हें अपने राज्य का अंग अवश्य बनाया किन्तु वह गोर का सुल्तान था, न कि दिल्ली का। 1206 ई. में मुहम्मद गौरी की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारत स्थित उसके तुर्की प्रदेशों पर स्वतंत्र राजनीतिक अधिकार स्थापित किया। हालांकि कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपनी राजधानी लाहौर को बनाया था। उसने अपनी प्रशासनिक गतिविधियों का केंद्र लाहौर को बनाया था, जिसके कारण दिल्ली सल्तनत का पहला वैधानिक एवं वास्तविक सुल्तान इल्तुतमिश माना जाता है, जो दिल्ली से शासन करता था। इल्तुतमिश ने 1229 ई. में बगदाद के **अब्बासी खलीफा अल-मुस्तंसिर बिल्लाह** से 'खिलअत' / सनद प्राप्त कर वैधानिक सुल्तान की पदवी धारण की थी। कुतुबुद्दीन ऐबक की मुख्य सफलता भारत में तुर्की राज्य को गोर और गजनी के स्वामित्व से मुक्त करके उसे स्वतंत्र अस्तित्व प्रदान करना था। इसी कारण उसे भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक माना गया।

2. प्रारंभिक जीवन और दासता से उत्थान

कुतुबुद्दीन ऐबक तुर्क था और वह ऐबक कबीले से संबंधित था। तुर्की भाषा में 'ऐबक' का अर्थ 'चंद्रमा का देवता' ['चंद्रमुखी' (अमीर-ए-चाँद)] या 'टूटे हाथ वाला' (शल/ऐबयुक्त अंग वाला) होता है। उसके माता-पिता तुर्किस्तान के निवासी थे। बचपन में निशापुर के काजी फकरुद्दीन अब्दुल अजीज कूकी ने उसे एक दास के रूप में खरीदा। काजी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को सभी प्रकार की धार्मिक, सैन्य व धनुर्विद्या की शिक्षा प्रदान की। काजी की मृत्यु के बाद उसे निशापुर से गजनी

ले जाकर बेच दिया गया। और उसे गोरी द्वारा खरीद लिया गया। मुहम्मद गोरी की सेवा में आने के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक के जीवन में महान परिवर्तन आया। अपनी प्रतिभा, लगन, ईमानदारी, और स्वामीभक्ति के बल पर कुतुबुद्दीन ऐबक ने गोरी का विश्वास प्राप्त कर लिया। धीरे-धीरे उसने उन्नति करनी प्रारम्भ की। प्रारंभ में उसे “अमीर-ए-आखुर” (अश्वशाला का प्रधान) का पद मिला और तराइन के द्वितीय युद्ध के पश्चात 1192 ई० में गोरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को अपने भारतीय प्रदेशों का सूबेदार (मलिक-उल-हिंद / मुख्य प्रतिनिधि) नियुक्त किया। इस प्रकार गोरी की मृत्यु के अवसर पर कुतुबुद्दीन ऐबक गोरी के दिल्ली, लाहौर और उसके अधीन भारतीय प्रदेशों का सूबेदार था।

कुतुबुद्दीन ऐबक में वे समस्त गुण विद्यमान थे जो एक योग्य एवं प्रतिभाशाली शासक में होने आवश्यक थे। मुसलमान इतिहासकारों ने विशेषतः मिन्हाज-उस-सिराज ने अपनी पुस्तक तबकात-ए-नासरी में ऐबक की बड़ी प्रशंसा की है। वास्तव में वह उस प्रशंसा के सर्वथा योग्य था। यदि उसके सम्पूर्ण जीवन का गहराई से अवलोकन किया जाय तो उसमें अनेक विशेषताएं विद्यमान थीं।

3. मोहम्मद गौरी का सहायक और सैन्य योगदान

मुहम्मद गोरी के समय में कुतुबुद्दीन ऐबक ने कई महत्वपूर्ण कार्य किये। तराइन के द्वितीय युद्ध(1192 ई०) के अवसर पर वह गोरी के साथ था। गोरी के भारत से वापस चले जाने के पश्चात उसने अजमेर, मेरठ आदि स्थानों के विद्रोह को दबाया और दिल्ली पर अपना नियंत्रण स्थापित किया। 1193 ई. में ऐबक ने दिल्ली को अपनी मुख्य सैन्य राजधानी बनाया। 1194 ई० में जब गोरी ने कन्नौज के शासक जयचंद से चंदावर नामक स्थान पर युद्ध किया तब भी कुतुबुद्दीन ऐबक उसके साथ था। उसके पश्चात उसने अलीगढ़ (कोल) को जीता, अजमेर के विद्रोह को दबाया, गुजरात की राजधानी अहिलवाढ को लूटा (1197 ई.), राजस्थान के कुछ किलों को जीता और बुंदेलखंड के राजा परमर्दिदेव को परास्त करके कालिंजर, महोबा, और खजुराहो पर अधिकार कर लिया। 1202-03 ई. में कालिंजर दुर्ग पर विजय ऐबक की सैन्य उपलब्धियों में महत्वपूर्ण मानी जाती है। इसी दौरान ऐबक के सहायक सेनापति इखितयारुद्दीन मुहम्मद बिन

बख्तियार खिलजी ने बिहार (नालंदा व विक्रमशिला विश्वविद्यालयों को नष्ट किया) एवं बंगाल (लखनौती के शासक लक्ष्मणसेन को पराजित किया) पर विजय प्राप्त की। इस प्रकार कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपने स्वामी को न केवल भारत के विभिन्न प्रदेशों को जीतने में सहायता दी बल्कि समय-समय पर उसकी अनुपस्थिति में विजित प्रदेशों को तुर्कों के आधिपत्य में रखा और साम्राज्य का विस्तार भी किया।

4. राज्यारोहण और स्वतंत्र तुर्की सत्ता की स्थापना

मुहम्मद गोरी की जिस समय मृत्यु हुई (1206 ई.) उस समय उसके भारतीय प्रदेशों का प्रबंध कुतुबुद्दीन ऐबक के हाथों में था। मुहम्मद गोरी की हार्दिक इच्छा थी कि उसकी मृत्यु के पश्चात कुतुबुद्दीन ऐबक उसके भारतीय साम्राज्य का उत्तराधिकारी हो। इसी अभिप्राय से मरने के कुछ ही समय पूर्व उसने उसको "मलिक" की उपाधि प्रदान की। जब मुहम्मद गोरी की मृत्यु का समाचार फैला तो लाहौर के नागरिकों ने कुतुबुद्दीन ऐबक को शासन सत्ता अपने हाथों में लेने के लिये आमंत्रित किया। उसने शीघ्र ही लाहौर की ओर प्रस्थान किया और वहाँ पहुँच कर समस्त शासन पर अपना अधिकार स्थापित किया। उसने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की वरन् मलिक एवं सिपहसलार की उपाधियों का ही प्रयोग किया। उसका राज्याभिषेक गोरी की मृत्यु के तीन माह उपरांत 25 जून 1206 ई० को सम्पन्न हुआ। 1208 ई. में ग़ज़नी के शासक ग़ियासुद्दीन महमूद (गोरी का भतीजा) ने ऐबक को औपचारिक मान्यता दी और उसे दासता से मुक्ति-पत्र (खत-ए-आजादी) तथा राजकीय प्रतीक प्रदान किए। उसने ऐबक के पास सिंहासन, छत्र, नक्कारा एवं पताका भी भेजे, तथापि ऐबक ने व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक रूप से केवल 'मलिक' एवं 'सिपहसलार' की उपाधि से ही शासन करना उचित समझा और अपने नाम का खुल्बा या सिक्का जारी नहीं किया। इस प्रकार भारत में दिल्ली सल्तनत की स्वतंत्र सत्ता स्थापित हुई।

5. प्रारंभिक राजनीतिक चुनौतियाँ

गोरी की मृत्यु के बाद उसका साम्राज्य उसके अयोग्य उत्तराधिकारियों के कारण छिन्न-भिन्न होने लगा। समस्त साम्राज्य पर मुहम्मद गोरी के चार दासों का अधिकार था। जिन्होंने स्वतंत्र शासक के रूप में कार्य करना प्रारम्भ किया। कुतुबुद्दीन ऐबक का दिल्ली और उसके आस-पास के प्रदेशों पर, ताजुद्दीन एल्दोज (यल्दौज) का ग़ज़नी पर, नासिरुद्दीन कुबाचा का सिंध और

मुल्तान पर, तथा मुहम्मद बिन वख्तियार खिलजी का बिहार और बंगाल पर अधिकार था। कुतुबुद्दीन ऐबक को अपनी सत्ता दृढ़ करने के लिये इन प्रतिद्वंद्वियों का सामना करना था, जो कोई सरल कार्य नहीं था। वे किसी भी बात में कुतुबुद्दीन ऐबक से कम नहीं थे। कुतुबुद्दीन ऐबक और एल्दोज में लाहौर के प्रश्न पर विशेष प्रतिद्वंद्विता थी। इन कठिनाइयों के अतिरिक्त कुतुबुद्दीन ऐबक के सामने एक अन्य समस्या यह थी कि राजपूत अपनी खोई हुई सत्ता को पुनः प्राप्त करना चाहते थे। और उसके लिए वे प्रयत्नशील थे। विभिन्न प्रदेशों के राजपूतों ने पुनः अपनी सत्ता स्थापित कर ली थी। मध्य एशिया की राजनीति भी उसके सामने संकट उत्पन्न कर रही थी। ख्वारिज्म शाह गजनी को अपने अधिकार में कर भारत विजय का स्वप्न देख रहा था।

6. कठिनाइयों का अंत

1. ताजुद्दीन एल्दोज़ से संबंध

एल्दोज ने कुतुबुद्दीन ऐबक की सत्ता स्वीकार नहीं की। उसने सन 1208 ई० एक विशाल सेना द्वारा पंजाब एवं सीमावर्ती क्षेत्रों पर अधिकार करने का प्रयास किया, किन्तु कुतुबुद्दीन ऐबक ने उसे बुरी तरह पराजित किया। इसके शीघ्र उपरान्त उसने गजनी पर अधिकार कर लिया परंतु उसकी यह विजय अल्पकालीन (40 दिन) रही। कुतुबुद्दीन ऐबक से असन्तुष्ट होकर गजनी की जनता ने एल्दोज को आमंत्रित किया, जिसका लाभ उठाकर एल्दोज ने गजनी पर अधिकार कर लिया जिस कारण कुतुबुद्दीन ऐबक को वापस आना पड़ा। इसके उपरान्त कुतुबुद्दीन ऐबक ने मध्य एशिया की राजनीति की ओर ध्यान नहीं दिया, किन्तु उसने एल्दोज को भरतीय राजनीति में सफलता प्राप्त नहीं होने दी। ऐबक की सबसे बड़ी कूटनीतिक सफलता भारत को गजनी व मध्य एशिया के झगड़ों से अलग रखना थी।

2. नासिरुद्दीन कुबाचा से संबंध

कुतुबुद्दीन ऐबक का दूसरा प्रतिद्वंद्वी कुबाचा था। एल्दोज के विपरीत कुबाचा के साथ कुतुबुद्दीन ऐबक ने मैत्रीपूर्ण और कूटनीतिक चल चली। ऐबक ने वैवाहिक संबंधों के माध्यम से अपने राजनीतिक संबंधों को मजबूत किया। उसकी बहन का विवाह नासिरुद्दीन कुबाचा से हुआ था, जबकि उसकी पुत्री का विवाह इल्तुतमिश से किया गया। इन संबंधों ने तुर्क अमीरों के बीच उसके राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाने में सहायता की। इससे दोनों की कटुता समाप्त हो गयी।

कुबाचा ने कुतुबुद्दीन ऐबक की अधीनता स्वीकार कर ली। कुतुबुद्दीन ऐबक ने इस प्रकार एक अन्य प्रभावशाली प्रतिद्वंदी को अपने पक्ष में मिलाकर अपनी स्थिति सुदृढ़ कर लिया।

3. बंगाल और बिहार के खिलजी सरदार

मुहम्मद बिन वख्तियार खिलजी की मृत्यु के बाद अलिमर्दान ने बंगाल तथा बिहार पर अधिकार कर एक स्वतंत्र शासक के रूप में कार्य करना प्रारंभ कर दिया था। परन्तु उसकी स्थिति सुदृढ़ नहीं थी और खिलजी सरदारों ने उसे बंदी बना लिया था। वह कारागार से भागकर ऐबक के पास लाहौर में आया (चूँकि उस समय ऐबक की प्रशासनिक राजधानी लाहौर थी)। यह कुतुबुद्दीन ऐबक के पास एक सुनहरा मौका था। उसने अलिमर्दान को सैनिक सहायता देकर उसे लखनौती में अधीनस्थ शासक के रूप में स्थापित किया। अलिमर्दान और अन्य खिलजी सरदारों ने कुतुबुद्दीन ऐबक की अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार बंगाल पर भी कुतुबुद्दीन ऐबक का प्रभाव स्थापित हो गया।

4. राजपूत राज्यों के प्रति नीति

अपनी आंतरिक स्थिति मजबूत कर कुतुबुद्दीन ऐबक ने उन विद्रोही राजपूत राज्यों की ओर ध्यान दिया, जिन्होंने गोरी की हत्या से उत्पन्न स्थिति का लाभ उठाकर स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली थी। और तुर्की राज्यों को निरन्तर चुनौती दे रहे थे। कालिंजर और ग्वालियर हाथ से निकल गए थे। बदायूँ और फरूखाबाद से तुर्कों को निकाल दिया गया था। अनेक राज्यों ने कर देना बंद कर दिया था। अतः कुतुबुद्दीन ऐबक के लिये इन राज्यों की तरफ ध्यान देना आवश्यक हो गया था। कुतुबुद्दीन ऐबक ने बदायूँ पर पुनः अधिकार किया। वहाँ इल्तुतमिश को प्रशासक नियुक्त किया। इल्तुतमिश सुल्तान बनने से पूर्व बदायूँ का इक्तादार/प्रशासक था। जिन राजाओं ने कर देना बन्द कर दिया था। उनसे पुनः कर बसूला जाने लगा, और तुर्की सत्ता स्थापित की गई।

5. राजनीतिक नीति और कूटनीतिक कुशलता

कुतुबुद्दीन ऐबक एक कुशल राजनीतिज्ञ था। उसने अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के अभिप्राय से अपनी पुत्री का विवाह अपने एक दास इल्तुतमिश से किया। और अपनी बहन का विवाह नासिरुद्दीन कुबाचा से किया तथा उसने ताजुद्दीन यल्दौज की पुत्री से स्वयं विवाह किया था।

इन वैवाहिक संबंधों से दल शक्तिशाली हो गया। इसके अतिरिक्त उसने भारत का संबंध गजनी से विच्छेद कर दिया। इसका लाभ यह हुआ कि भारत पर से गजनी का प्रभुत्व समाप्त हो गया और मध्य एशिया की राजनीति से भारत में स्थापित नव-मुस्लिम राज्य विशेष रूप से मुक्त हो गया। इस नीति से भारत में स्थापित तुर्की सत्ता को गजनी और मध्य एशिया के राजनीतिक संघर्षों से अपेक्षाकृत स्वतंत्र रूप से विकसित होने का अवसर मिला।

7. कुतुबुद्दीन ऐबक का चरित्र और प्रमुख विशेषताएँ

(A) व्यक्तित्व और शासन-व्यवहार

कुतुबुद्दीन ऐबक के व्यक्तित्व में सैनिक साहस, स्वामीभक्ति, राजनीतिक व्यावहारिकता और उदारता प्रमुख गुण थे। उसके शासनकाल की अवधि बहुत छोटी थी, इसलिए उसकी प्रशासनिक क्षमता का उतना व्यापक परीक्षण नहीं हो सका जितना बाद के सुल्तानों के समय हुआ। समकालीन मुस्लिम इतिहासकारों ने उसके साहस और उदारता की विशेष प्रशंसा की है।

(B). उदार एवं दानी

वह अपने जीवन में बड़ा उदार एवं दानी व्यक्ति था। उसकी अत्यधिक दानशीलता के कारण उसे 'लाखबख्श' कहा गया। उसने अपने जीवन काल में लाखों रुपयों का दान किया। अत्यधिक दानशीलता के कारण उसे 'हातिम द्वितीय' तथा सुरिले स्वर में कुरान पढ़ने के कारण उसे 'कुरानखवां' भी कहा जाता था। हाथियों का अत्यधिक दान करने के कारण उसे 'पील बख्श' की उपाधि भी दी गई थी।

(C). योग्य एवं कुशल सेनापति

वह एक योग्य एवं कुशल सेनापति था। सेनापति के रूप में उसने तुर्क साम्राज्य की बड़ी सेवा की। मुहम्मद गोरी के अधिकांश भातीय आक्रमणों की सफलता का श्रेय कुतुबुद्दीन ऐबक को प्राप्त है। प्रारम्भ में वह अपने स्वामी का ध्यान अपनी उदारता के कारण अपनी ओर आकर्षित

करने में सफल हुआ। किन्तु बाद में अपने सैनिक गुणों के कारण वह दिन-प्रतिदिन उसका कृपापात्र बनता गया और अन्त में उसके गुणों से प्रभावित होकर मुहम्मद गोरी ने उसको अपने भरतीय राज्य में अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया। उसकी मृत्यु के बाद वह स्वम् भारतीय प्रदेशों का स्वतंत्र तुर्क शासक बना। उसने पूर्ण भक्ति से अपने स्वामी की सेवा की, उसको विशाल साम्राज्य की स्थापना में बड़ा प्रशंसनीय सहयोग प्रदान किया। वह बड़ा वीर, साहसी, उत्साही तथा निर्भीक व्यक्ति था। उसने समस्त कठिनाइयों का बड़ी वीरता तथा साहस से सामना किया और वह किसी भी समय उनसे भयभीत नहीं हुआ।

8. प्रशासनिक सीमाएँ और ऐतिहासिक मूल्यांकन

कुतुबुद्दीन ऐबक के शासनकाल की सबसे बड़ी सीमा उसकी अल्प अवधि (1206-1210 ई., कुल 4 वर्ष) थी। उसे भारत में स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने के बाद प्रशासनिक संस्थाओं को पूरी तरह व्यवस्थित करने का पर्याप्त समय नहीं मिला। उसका अधिकांश ध्यान नवोदित तुर्की सत्ता को सुरक्षित रखने और राजनीतिक विरोधियों से निपटने पर रहा। इसी कारण दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक एवं राजनीतिक व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करने का श्रेय बाद में इल्तुतमिश को दिया गया। ऐबक के शासन का मूल्यांकन करते समय उसकी सीमाओं के साथ-साथ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि उसने स्वतंत्र तुर्की सत्ता के लिए आवश्यक राजनीतिक आधार तैयार किया।

9. साहित्य, विद्वान संरक्षण और ऐतिहासिक व्यक्तित्व

कुतुबुद्दीन ऐबक अपनी उदार प्रवृत्ति और दानशीलता के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध था। उसकी दान देने की आदत इतनी प्रख्यात थी कि लोग उसे “लाखबखश” अर्थात् लाखों का दान करने वाला कहकर संबोधित करते थे। प्रशासन और राजनीति के क्षेत्र में वह दूरदर्शी और समझदार शासक माना जाता था। साथ ही, वह कूटनीति में भी दक्ष था। ऐबक केवल शासन ही नहीं चलाता था, बल्कि साहित्य और कला को भी संरक्षण प्रदान करता था। उसके दरबार में हसन निज़ामी (रचना: 'ताजुल माआसिर') और फ़र्रुखुद्दीन/ फ़क्र-ए-मुदब्बिर (रचना: 'आदाब उल हर्ब व शशुजाअत') जैसे विद्वानों की उपस्थिति इसे और भी गौरवपूर्ण बनाती थी। इस दृष्टि से देखा

जाए तो ऐबक केवल एक पराक्रमी योद्धा ही नहीं, बल्कि विद्वानों और कलाकारों का सच्चा संरक्षक भी था।

10. मृत्यु और उत्तराधिकार: आरामशाह एवं इल्तुतमिश

सन 1210 ई. में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरकर कुतुबुद्दीन ऐबक की आकस्मिक मृत्यु के बाद दिल्ली सल्तनत के समक्ष उत्तराधिकार का गंभीर संकट उत्पन्न हो गया।

ऐबक की मृत्यु के तुरंत बाद लाहौर के तुर्क सरदारों और अमीरों ने आरामशाह को गद्दी पर बैठाया। आधुनिक इतिहासकार एवं शोध दर्शाते हैं कि ऐबक की केवल तीन बेटियाँ थीं; मिन्हाज ने उसके पुत्र का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया, जबकि अबुल फज़ल ने आरामशाह को ऐबक का भाई बताया है, जबकि अन्य विद्वानों के अनुसार वह ऐबक का भाई अथवा मात्र एक अयोग्य उत्तराधिकारी था।

आरामशाह एक अत्यंत दुर्बल, अदूरदर्शी और अयोग्य शासक सिद्ध हुआ। उसके गद्दी पर बैठते ही सल्तनत में अराजकता फैल गई—बंगाल में खिलजी सरदारों ने स्वयं को स्वतंत्र कर लिया, सिंध और मुल्तान में नासिरुद्दीन कुबाचा ने अपनी स्वायत्तता की घोषणा कर दी, तथा राजपूत शासकों ने पुनः विद्रोह शुरू कर दिए। आरामशाह की अयोग्यता को देखते हुए दिल्ली के तुर्क सरदारों और प्रांतीय इक्तेदारों ने दिल्ली के मुख्य काजी अली इस्माइल के नेतृत्व में बदायूँ के इक्तादार इल्तुतमिश को दिल्ली की सत्ता संभालने के लिए आमंत्रित किया।

इल्तुतमिश अपनी सेना लेकर दिल्ली की ओर बढ़ा। सन 1211 ई. में दिल्ली के निकट 'जूड के युद्ध' (Battle of Jud) में इल्तुतमिश ने आरामशाह को पराजित कर उसका वध कर दिया और दिल्ली सल्तनत का सुल्तान बना। आरामशाह का शासनकाल मात्र आठ माह (1210-1211 ई.) का रहा। इस प्रकार इल्तुतमिश के राज्यारोहण के साथ ही दिल्ली सल्तनत में **ऐबक वंश (मुईज्जी वंश)** के स्थान पर **शम्सी राजवंश** की स्थापना हुई और दिल्ली सल्तनत का वास्तविक सुदृढ़ीकरण संभव हो सका।

11. कुतुबुद्दीन ऐबक कालीन स्थापत्य कला एवं सांस्कृतिक योगदान

(A) प्रस्तावना

भारत में इंडो-इस्लामिक स्थापत्य की प्रारंभिक नींव कुतुबुद्दीन ऐबक के शासनकाल में पड़ी। उनके द्वारा निर्मित कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, कुतुब मीनार और अढ़ाई दिन का झोपड़ा भारतीय तथा इस्लामी स्थापत्य शैलियों के अद्वितीय समन्वय का उदाहरण हैं। कुतुबुद्दीन ऐबक सिर्फ एक सक्षम सेनापति नहीं था, बल्कि उसे कला और स्थापत्य का गहरा शौक था। अतः ऐबक ने स्थापत्य कला के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। ऐबक ने अपने अल्प शासनकाल में कई भव्य इमारतों का निर्माण करवाया, जिनमें कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, कुतुब मीनार और अढ़ाई दिन का झोपड़ा प्रमुख हैं। इन इमारतों में भारतीय तथा इस्लामी स्थापत्य शैलियों का अनूठा संगम दिखाई देता है।

(B) कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद

तुर्कों द्वारा भारत में निर्मित यह प्रथम मस्जिद (महरोली, दिल्ली) थी। इतिहासकार कुतुबुद्दीन ऐबक के शासनकाल में दिल्ली के कुतुब परिसर में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण कराया गया। इसके स्थापत्य में पूर्ववर्ती भारतीय मंदिर स्थापत्य के अनेक स्तंभों और अलंकरणात्मक तत्वों का पुनः उपयोग दिखाई देता है। जॉन मार्शल के अनुसार इस मस्जिद का निर्माण 27 पूर्व-निर्मित ध्वंस किए गए हिंदू/विष्णु एवं जैन मंदिरों के ध्वंसावशेष पर किया गया। मस्जिद में लगी जाली, स्तम्भ एवं दरवाजे मंदिरों के ही अवशेष थे। इस मस्जिद के प्रांगण में प्रसिद्ध गुप्तकालीन 'लौह स्तंभ' (चंद्रगुप्त द्वितीय का) स्थित है। इस मस्जिद में सर्वप्रथम इस्लामी स्थापत्य कला की मजबूती एवं सौंदर्य जैसी विशेषताओं को उभारा गया है। इल्तुतमिश एवं अलाउद्दीन खिलजी के समय में मस्जिद के क्षेत्र को बढ़ाया गया था। इस मस्जिद की सर्वोत्कृष्ट विशेषता उसका मकसुरा एवं इसके साथ जुड़ा क़िब्ला तिवान है। यह मस्जिद 212 फुट लंबे तथा 150 फुट चौड़े **समकोणनुमा** चबूतरे पर स्थित है। **इंडो-इस्लामिक** शैली में निर्मित स्थापत्यकला का यह पहला उदाहरण है जिसमें स्पष्ट हिन्दू प्रभाव दिखाई देता है।

(C) कुतुब मीनार

कुतुब मीनार का निर्माण ऐबक ने प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में दिल्ली के महरौली में प्रारंभ करवाया। ऐबक केवल पहली मंजिल का निर्माण करा सका। कुतुबुद्दीन ऐबक इस इमारत की चार मंजिल का निर्माण करवाना चाहता था। परन्तु एक मंजिल के निर्माण के बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। बाद में इसकी शेष मंजिलों का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया, इल्तुतमिश ने इसकी तीन मंजिलों का निर्माण करवाया (अब तक कुल मंजिल चार)। सन 1369 ई० में आकाशीय बिजली गिरने से मीनार की ऊपरी मंजिल क्षतिग्रस्त हो गई थी तब फ़िरोज़शाह तुगलक ने क्षतिग्रस्त मंजिल की मरम्मत करवाई एवं एक नई मंजिल का निर्माण करवाया (अब तक कुल मंजिल पाँच)। सन 1505 ई० में भूकंप की वजह से मीनार को क्षति पहुँची बाद में सिकंदर लोदी ने इसकी मरम्मत करवाई। पाँच मंजिलों में बनी यह इमारत 71.4 / 72.5 मीटर ऊँची थी। कुतुब मीनार का निर्माण ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में कराया गया था। यह मीनार दिल्ली से 12 मील की दूरी पर महरौली गांव में स्थित है। प्रारम्भ में इस मीनार/इमारत का प्रयोग अज़ान (नमाज़ के लिए बुलावा) के लिए होता था पर कालान्तर में इसे कीर्ति स्तम्भ के रूप में मानने लगा। पर्सि ब्राउन का मानना है कि: “कुतुब मीनार का निर्माण विश्व के समक्ष इस्लाम की शक्ति के उदघोष के लिए किया गया था। यह न्याय, प्रमुखता तथा धर्म के स्तम्भ का प्रतीक थी। उन्होंने इसे पूर्व तथा पश्चिम पर अल्लाह की छाया का प्रतीक माना।”

कुतुब मीनार का निचला भाग लगभग 15 मीटर है जो ऊपर की ओर जाकर मात्र 3 मीटर रह जाता है। कुतुब मीनार की पहली तीन मंजिलें पत्थर से निर्मित हैं, जिनका बाहरी आवरण लाल है। ऊपर की दो मंजिलों में अन्दर से लाल पत्थर का प्रयोग किया गया है एवं बाहर से सफेद पत्थर का आवरण है। इस मीनार में प्रवेश करने के लिए उत्तर की दिशा में एक दरवाजा बना हुआ है। ऊपर चढ़ने के लिए मीनार में 375 सीढ़ियाँ बनाई गई हैं।

(D). अढ़ाई दिन का झोपड़ा

अढ़ाई दिन का झोपड़ा अजमेर स्थित एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक इंडो-इस्लामिक स्थापत्य स्मारक है, जिसमें पूर्ववर्ती चौहानकालीन स्थापत्य अवयवों का पुनः उपयोग दिखाई देता है। अढ़ाई दिन का झोपड़ा नामक इमारत का इतिहास इस प्रकार से है:

1. चौहान वंश की धरोहर से मस्जिद तक का सफर

भारत में तुर्कों की सत्ता की स्थापना के समय उत्तर भारत में अनेक राजपूत वंशों का शासन था। जिसमें एक महान वंश चौहान वंश भी था, इस वंश के महान शासक विग्रहराज चतुर्थ, जिसे बीसलदेव के नाम से भी जाना जाता था। ये शाकंभरी के चौहान वंश से संबंधित थे। विग्रहराज चतुर्थ ने अजमेर में एक संस्कृत महाविद्यालय का निर्माण करवाया था। यह महाविद्यालय चौकोर आकर में बनाया गया था और इस भवन के प्रत्येक कोने पर एक गुम्बद के आकार का मंडप बना था। यही पर एक मन्दिर का निर्माण भी कराया गया था। जो सरस्वती देवी को समर्पित है। विग्रहराज चतुर्थ द्वारा निर्मित संस्कृत महाविद्यालय की दीवारों पर उनके द्वारा रचित प्रसिद्ध संस्कृत नाटक 'हरकेलि' की पंक्तियाँ उत्कीर्ण (लिखी) हैं। इस भवन के निर्माण को देखने पर ऐसा प्रतीत होता था कि इसके निर्माण में हिन्दू और जैन वास्तुकला की विशेषताएँ शामिल हैं। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि संस्कृत महाविद्यालय जैनियों का महाविद्यालय था। यहां के स्थानीय लोगों का मानना है कि सेठ वीरम देव ने पंच कल्याण मनाने के लिये इस महाविद्यालय का निर्माण करवाया था। सन 1192 ई0 में तराइन के द्वितीय युद्ध में मुहम्मद गोरी द्वारा पृथ्वीराज चौहान तृतीय को पराजित करने के बाद ऐबक ने इस मस्जिद (अढ़ाई दिन का झोपड़ा) का निर्माण करवाया था।

2. दिल्ली सल्तनत की धरोहर एवं स्थापत्य विशेषताएँ

कुतुबुद्दीन ऐबक ने अढ़ाई दिन का झोपड़ा, जो वास्तव में एक मस्जिद है, का निर्माण राजस्थान के अजमेर में करवाया था। इस मस्जिद के वास्तुकार का नाम 'अबू बक्र' था। पृथ्वीराज चौहान को हराने के बाद एक बार मुहम्मद गोरी अजमेर के रास्ते से गुजर रहा था, तो उसे रास्ते में अनेक मंदिर तो दिखाई दिये लेकिन कोई मस्जिद नजर नहीं आई। इसीलिए उसने अपने दास कुतुबुद्दीन ऐबक को, नमाज पढ़ने के लिये एक मस्जिद के निर्माण का आदेश दिया। गोरी ने यह भी आदेश दिया कि ढाई दिन के भीतर मस्जिद बनानी चाहिए। एक शिलालेख के अनुसार यह मस्जिद सन 1199 ई0 में बनकर तैयार हुई थी। कुतुबुद्दीन ऐबक के उत्तराधिकारी इल्तुतमिश ने मेहराबों और शिलालेखों के साथ एक जालीदार दीवार का निर्माण भी करवाया था। शिलालेखों में इल्तुतमिश और पर्यवेक्षक का नाम अहमद इब्न मुहम्मद अल- अरिद है।

इस मस्जिद के निर्माण में भी कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद की तरह ही ध्वस्त मन्दिर अथवा मठ के ध्वंशावशेषों का प्रयोग किया गया है। यह मस्जिद कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद की तुलना

में अधिक बड़े आकार की एवं आकर्षक है। इस मस्जिद के आकार को कालान्तर में इल्तुतमिश द्वारा विस्तार दिया गया। इस मस्जिद में तीन स्तंभों का प्रयोग किया गया है जिसके ऊपर 20 फुट ऊँची छत का निर्माण किया गया है, इसमें पाँच मेहराबदार दरवाजे भी बनवाये गए हैं। मुख्य दरवाजा सर्वाधिक ऊँचा है। मस्जिद के प्रत्येक कोने में चक्राकार एवं बाँसुरी के आकार की मीनारे निर्मित है।

3. नामकरण विवाद

इस मस्जिद के निर्माण में भी मंदिरों के ध्वंसावशेषों का उपयोग हुआ है। इसमें तीन स्तंभ पंक्तियाँ हैं जिन पर 20 फुट ऊँची छत टिकी है और पाँच मेहराबदार द्वार हैं। मुख्य द्वार सबसे ऊँचा और आकर्षक है। इस मस्जिद के नाम को लेकर इतिहासकारों में विवाद है। इस मस्जिद के नाम पर सभी इतिहासकारों का मत अलग-अलग है। इसके नाम के विषय में जॉन मार्शल का कहना है कि “क्योंकि इस मस्जिद का निर्माण मात्र ढाई दिन (60 घंटे) में किया गया इसीलिए इस मस्जिद को अढ़ाई दिन का झोपड़ा कहा जाता है।” पर्सि ब्राउन का कहना है कि “यहाँ एक झोपड़ी के पास प्राचीन काल में अढ़ाई दिन का मेला लगता था, इस कारण इस इस स्थान को अढ़ाई दिन का झोपड़ा कहा गया।”

एक पौराणिक/स्थानीय कथा के अनुसार मनुष्य का जीवन **पृथ्वी पर ढाई दिन** का होता है, इसी कारण इस इमारत को 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' कहा गया। कुछ अन्य मान्यताएं हैं कि मराठा काल में फ़कीर लोग उर्स का त्यौहार मनाते थे और इस उर्स का आयोजन ढाई दिनों तक होता था इसीलिए इस मस्जिद का नाम अढ़ाई दिन का झोपड़ा रखा गया। इसी प्रकार का मत पर्सि ब्राउन का भी है।

12. कुतुबुद्दीन ऐबक: एक दृष्टि में (परीक्षा-उपयोगी तथ्य)

विषय / पहलू	ऐतिहासिक विवरण
पूरा नाम	कुतुबुद्दीन ऐबक (ऐबक का अर्थ: 'चंद्रमा का देवता' या 'टूटे हाथ वाला')
वंश	गुलाम वंश / ममलूक वंश [परीक्षा प्रश्न: ममलूक वंश शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग इतिहासकार ए.बी.एम. हबीबुल्ला ने किया था।]

प्रारंभिक जीवन	तुर्किस्तान में जन्म, काज़ी फ़ख़रुद्दीन अब्दुल अजीज कूकी द्वारा पालन-पोषण।
उपाधियाँ	मलिक, सिपहसालार, लाखबख़्श, कुरानख्वां, हातिम द्वितीय [परीक्षा प्रश्न: ऐबक ने कभी 'सुल्तान' की उपाधि धारण नहीं की और न ही अपने नाम का सिक्का चलाया या खुत्बा पढ़ाया।]
शासन अवधि	1206 ई. से 1210 ई. (कुल 4 वर्ष)
राजधानी	लाहौर (मकबरा भी लाहौर में ही स्थित है)
मृत्यु का कारण	1210 ई. में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरकर।

13.समग्र ऐतिहासिक मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

कुतुबुद्दीन ऐबक न केवल एक योग्य सेनापति ही था, वरन् वह साहित्य और कला से भी प्रेम करता था। वह विद्वानों का आदर करता था और अपने राजदरबार में उनको आश्रय भी प्रदान करता था। उसके दरबार में हसन निज़ामी (रचना: ताजुल माआसिर) तथा फ़क्र-ए-मुदब्बिर (रचना: आदाब उल हर्ब व श्शुजाअत) निवास करते थे।

दिल्ली सल्तनत का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक ही था। यद्यपि वह छोटी अवधि के लिए ही शासक रहा (उसने मलिक व सिपहसालार पदवियाँ ही रखीं), तथापि इसी बीच उसने भारत में तुर्की शासन की नींव डाल दी। ग़ोरी के सहायक के रूप में उसने भारत के अनेक प्रदेश जीते। उसने अपने राज्य में शान्ति और व्यवस्था कायम की। उसने दो प्रसिद्ध मस्जिदों का निर्माण भी करवाया—दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम और अजमेर में अढ़ाई दिन का झोपड़ा। उसने कुतुबमीनार बनवाने का कार्य प्रारम्भ किया, परन्तु वह इसे पूरा नहीं कर सका। इस अवधि में उसका अधिकांश समय नवजात तुर्की राज्य की सुरक्षा में ही व्यतीत हुआ। यही उसकी सबसे

बड़ी उपलब्धि है। उसके द्वारा स्थापित नींव पर ही आगे इल्तुतमिश और बलबन ने सल्तनत की भव्य इमारत खड़ी की।

कुतुबुद्दीन ऐबक में साहस, वीरता और कूटनीतिज्ञता विद्यमान थी। डॉ. हबीबुल्ला कुतुबुद्दीन ऐबक की प्रशंसा करते हुए कहते हैं—“कुतुबुद्दीन ऐबक में तुर्कों की निर्भीकता और पारसियों की परिष्कृत अभिरुचि तथा शालीनता पाई जाती है।”

निष्कर्षतः, एक दास के पद से ऊपर उठकर वह भारत का प्रथम तुर्क शासक बन गया। इसी कारण उसका स्थान भारतीय इतिहास में बहुत ऊँचा है। राजवंश की स्थापना में कुतुबुद्दीन ऐबक का स्थान वही है, जो बाबर का स्थान मुगल वंश की स्थापना में है।

आपकी दी गई सामग्री के आधार पर, सभी 25 प्रश्नों को उसी कॉम्पैक्ट फॉर्मेट में प्रस्तुत किया गया है और सही उत्तर वाले विकल्प को बोल्ट (Bold) कर दिया गया है:

कुतुबुद्दीन ऐबक का इतिहास और स्थापत्य कला (MCQs)

1. गुलाम वंश का संस्थापक कौन था?

(a) कुतुबुद्दीन ऐबक (b) अलाउद्दीन खिलजी (c) इल्तुतमिश (d) बलबन

स्पष्टीकरण: 1206 ई. में मुइजुद्दीन मुहम्मद गोरी की मृत्यु के बाद उसके भारतीय साम्राज्य की बागडोर कुतुबुद्दीन ऐबक ने संभाली। उसने लाहौर को केंद्र बनाकर दिल्ली सल्तनत तथा प्रथम तुर्की साम्राज्य (जिसे सामान्यतः 'गुलाम वंश' कहा जाता है) की स्थापना की। भारत में तुर्की राज्य की स्थापना का श्रेय उसी को जाता है।

2. गुलाम वंश का प्रथम शासक कौन था?

(a) इल्तुतमिश (b) कुतुबुद्दीन ऐबक (c) आरामशाह (d) बलबन

स्पष्टीकरण: दिल्ली सल्तनत पर (1206 से 1290 ई.) शासन करने वाले सुल्तानों में प्रथम शासक कुतुबुद्दीन ऐबक (1206–1210 ई.) ही था। ऐबक के पश्चात उसका पुत्र आराम शाह कुछ माह के

लिए गद्दी पर बैठा और उसके बाद इल्तुतमिश सुल्तान बना। परीक्षा की दृष्टि से ध्यान रखने योग्य तथ्य यह है कि ऐबक प्रथम शासक था, जबकि इल्तुतमिश को दिल्ली सल्तनत का प्रथम वास्तविक सुल्तान माना जाता है।

3. कुतुबुद्दीन ऐबक की राजधानी थी—

- (a) दिल्ली (b) लाहौर (c) अजमेर (d) लखनौती

स्पष्टीकरण: ऐबक ने दिल्ली को अपनी राजधानी कभी नहीं बनाया। उसने जून 1206 ई. में राज्यारोहण के समय लाहौर को अपनी राजधानी बनाया था। अपने पूरे चार वर्ष के अल्पकालीन शासनकाल का संचालन लाहौर से ही किया।

4. दिल्ली सल्तनत का कौन सा सुल्तान "कुरान-ख्वां" के नाम से जाना जाता है?

- (a) कुतुबुद्दीन ऐबक (b) बलबन (c) इल्तुतमिश (d) अलाउद्दीन खिलजी

स्पष्टीकरण: ऐबक को बचपन में निशापुर के काज़ी अब्दुल अजीज कोकी ने खरीदा था। काज़ी के संरक्षण में ही उसने सुरीले और शुद्ध स्वर में कुरान का पाठ करना सीख लिया था, जिस कारण उसे 'कुरान-ख्वां' (कुरान का पाठ करने वाला) के नाम से बुलाया जाने लगा।

5. "अढ़ाई दिन का झोंपड़ा" क्या है?

- (a) संत की झोपड़ी (b) मंदिर (c) मस्जिद (d) मीनार

स्पष्टीकरण: 'अढ़ाई दिन का झोंपड़ा' अजमेर (राजस्थान) में स्थित एक ऐतिहासिक मस्जिद है। मूल रूप से यह प्रसिद्ध संस्कृत महाविद्यालय था। इसका निर्माण चाहमान (चौहान) शासक विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) द्वारा किया गया था। इस संस्कृत महाविद्यालय को तराइन के युद्ध के पश्चात कुतुबुद्दीन ऐबक के आदेश पर मस्जिद के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। इसके स्थापत्य में आज भी प्राचीन भारतीय स्तंभ एवं कलाकृतियाँ दिखाई देती हैं।

6. निम्नलिखित में से किसने प्रसिद्ध कुतुब मीनार के निर्माण में योगदान नहीं दिया?

- (a) इल्तुतमिश (b) कुतुबुद्दीन ऐबक (c) फिरोजशाह तुगलक (d) ग़ियासुद्दीन तुगलक़

स्पष्टीकरण: दिल्ली स्थित प्रसिद्ध कुतुब मीनार के निर्माण कार्य को कुतुबुद्दीन ऐबक ने प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में प्रारंभ कराया (प्रथम मंजिल)। इल्तुतमिश ने इसे चार मंजिलों तक बनवाकर पूरा करवाया तथा बाद में फ़िरोज़शाह तुगलक के शासनकाल में आकाशीय बिजली से चौथी मंजिल क्षतिग्रस्त हो गई थी। क्षतिग्रस्त चौथी मंजिल के स्थान पर फ़िरोज़शाह तुगलक के शासनकाल में दो नई मंजिलों का पुनः निर्माण कराया गया। तुगलक वंश के संस्थापक ग़ियासुद्दीन तुगलक का इसके निर्माण या जीर्णोद्धार से कोई संबंध नहीं था।

7. कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु कैसे हुई?

(a) उनके एक महत्वाकांक्षी कुलीन व्यक्ति ने कपट से छुरा मारकर उनकी हत्या कर दी। (b) पंजाब पर अधिकार जमाने के लिए गजनी के शासक ताजुद्दीन यल्दौज के साथ युद्ध में उनकी मृत्यु हुई। (c) बुन्देलखण्ड के किले का घेरा डालते समय उन्हें चोटें लगी जिसके कारण बाद में उनकी मृत्यु हो गई। (d) चौगान खेलते समय घोड़े से गिरने के पश्चात उनकी मृत्यु हो गई।

स्पष्टीकरण: ऐबक नवंबर 1210 ई. में लाहौर में चौगान (आधुनिक पोलो खेल) का खेल खेल रहे थे, उसी समय घोड़े से अचानक गिर जाने के कारण ऐबक को गंभीर चोटें आईं, जिस कारण उनकी मृत्यु हो गई।

8. निम्नलिखित में से किसने दिल्ली को राजधानी के रूप में स्थापित किया था?

(a) इल्तुतमिश (b) कुतुबुद्दीन ऐबक (c) रजिया (d) मुइजुद्दीन गोरी

स्पष्टीकरण: कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपने शासन को लाहौर से ही संचालित किया था। ऐबक की मृत्यु के बाद इल्तुतमिश ही वह पहला सुल्तान था जिसने 1211 ई. में राजधानी को लाहौर से स्थानांतरित करके दिल्ली को सल्तनत की राजधानी बनाया।

9. निम्नलिखित में से किसने पंजाब के लिए कुतुबुद्दीन ऐबक से संघर्ष किया?

(a) नासिरुद्दीन कुबाचा (b) ताजुद्दीन यल्दौज (c) इब्तियारुद्दीन (d) इल्तुतमिश

स्पष्टीकरण: गोरी की मृत्यु के बाद पंजाब और लाहौर पर गज़नी के शासक ताजुद्दीन यल्दौज ने अपने अधिकार क्षेत्र में होने का दावा किया। पंजाब के अधिकार क्षेत्र को लेकर ऐबक को यल्दौज से निरंतर संघर्ष करना पड़ा।

10. सल्तनत के किस सुल्तान ने सर्वप्रथम अपनी राजधानी दिल्ली स्थानांतरित की थी?

- (a) कुतुबुद्दीन ऐबक (b) आराम शाह (c) **इल्तुतमिश** (d) बलबन

स्पष्टीकरण: सल्तनत काल में दिल्ली को सर्वप्रथम राजधानी बनाने का श्रेय इल्तुतमिश को जाता है। (छात्रों के भ्रम निवारण हेतु विकल्प में ऐबक का नाम शामिल किया जाता है, किंतु ऐबक की राजधानी लाहौर थी)।

11. निम्नलिखित में से कौन शासक पृथ्वीराज चौहान के नाम से प्रसिद्ध है?

- (a) पृथ्वीराज द्वितीय (b) पृथ्वीराज प्रथम (c) **पृथ्वीराज तृतीय** (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

स्पष्टीकरण: तराइन के प्रथम व द्वितीय युद्ध में भाग लेने वाले चहमान (चौहान) वंश के प्रसिद्ध शासक पृथ्वीराज तृतीय थे। इन्हें ही भारतीय इतिहास में 'पृथ्वीराज चौहान' या 'राय पिथोरा' के नाम से जाना जाता है।

12. "भारतीय गौरव (यश) का अंतिम सूर्य" किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

- (a) **पृथ्वीराज चौहान** (b) शिवाजी (c) महाराणा प्रताप (d) हेमू

स्पष्टीकरण: प्रसिद्ध इतिहासकार वी. ए. स्मिथ तथा कई पारंपरिक विद्वानों ने मध्यकालीन भारत के संदर्भ में तराइन के द्वितीय युद्ध (1192 ई.) से पूर्व अंतिम शक्तिशाली हिन्दू सम्राट के रूप में पृथ्वीराज चौहान (तृतीय) के लिए यह कथन प्रयुक्त किया है।

13. चंगेज खाँ के अधीन मंगोलों ने भारत पर आक्रमण किया था--

- (a) कुतुबुद्दीन ऐबक के शासनकाल में (b) **इल्तुतमिश के शासनकाल में** (c) बलबन के शासनकाल में (d) गयासुद्दीन के शासनकाल में

स्पष्टीकरण: इल्तुतमिश के शासनकाल में 1221 ई. में ख्वारिज्म के शाह के पुत्र जलालुद्दीन मंगबरनी का पीछा करते हुए चंगेज़ ख़ाँ के नेतृत्व में मंगोल भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा (सिंधु नदी) तक पहुँचे थे।

14. टंकों/टंका पर टकसाल का नाम अंकित करने की प्रथा का प्रारंभ किसने किया?

(a) कुतुबुद्दीन ऐबक ने (b) मुइज्जुद्दीन ने (c) **इल्तुतमिश ने** (d) रजिया ने

स्पष्टीकरण: सिक्कों पर टकसाल (Mint) का नाम अंकित करने की परंपरा को प्रारंभ करने वाला दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान इल्तुतमिश था। उसने शुद्ध अरबी शैली के सिक्के (चांदी का टंका और तांबे का जीतल) भी चलाए।

15. भारत के किस मध्यकालीन शासक ने "इक्ता व्यवस्था" प्रारम्भ की थी?

(a) कुतुबुद्दीन ऐबक (b) **इल्तुतमिश** (c) बलबन (d) अलाउद्दीन खिलजी

स्पष्टीकरण: 'इक्ता प्रणाली' की शुरुआत इल्तुतमिश ने की थी। इस प्रणाली के द्वारा उसने भारत में सामंती व्यवस्था को समाप्त करने और साम्राज्य को प्रशासनिक ईकाई में बांटकर अधिकारियों को वेतन के बदले भूमि आवंटित की।

16. निम्नलिखित में से किसने सर्वप्रथम 'सुल्तान' की उपाधि धारण की थी?

(a) कुतुबुद्दीन ऐबक (b) आरामशाह (c) रुखनुद्दीन फ़िरोज़ (d) **इल्तुतमिश**

स्पष्टीकरण: ऐबक ने केवल 'मलिक' और 'सिपाहसालार' की उपाधियाँ ही धारण की थीं। 1229 ई. में बगदाद के अब्बासी खलीफा अल-मुस्तंसिर बिल्लाह से 'खिलअत' (स्वीकृति पत्र) प्राप्त कर वैधानिक रूप से 'सुल्तान-ए-आज़म' की उपाधि धारण करने वाला इल्तुतमिश सल्तनत का प्रथम शासक था।

17. निम्नलिखित में से कौन रात्रि में अधिकतर समय प्रार्थना एवं चिंतन में व्यतीत करता था?

(a) बलबन (b) रुकनुद्दीन फ़िरोज़ (c) **इल्तुतमिश** (d) कुतुबुद्दीन ऐबक

स्पष्टीकरण: समकालीन इतिहासकार मिन्हाज-उस-सिराज ने कहा कि “इल्तुतमिश एक अत्यंत धर्मनिष्ठ शासक था जो रात्रि का अधिकांश समय ईश्वर की प्रार्थना, इबादत और गंभीर चिंतन में व्यतीत करता था।”

18. इक्ता वह भूमि होती थी, जिसकी आय पर---

(a) नागरिक प्रशासन का नियंत्रण था। (b) सैन्य प्रशासन का नियंत्रण था। (c) काजी का नियंत्रण था। (d) वक्फ का नियंत्रण था।

स्पष्टीकरण: सल्तनत काल में इक्ता का अर्थ है ‘हस्तांतरणीय राजस्व आबंटन (Revenue Assignment)’। इस भूमि से प्राप्त होने वाली आय (राजस्व) पर मुख्य रूप से सैन्य प्रशासन तथा इक्तादारों (मुक्ति/वली) के सैन्य रख-रखाव का नियंत्रण होता था।

19. कुतुब मीनार का निर्माण किस सूफी संत की स्मृति में कराया गया था?

(a) बाबा फरीद (b) निजामुद्दीन औलिया (c) नासिरुद्दीन चिराग-ए-देहलवी (d) कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी

स्पष्टीकरण: चिश्ती सिलसिले के प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की याद (स्मृति) एवं सम्मान में दिल्ली स्थित कुतुब मीनार का निर्माण ऐबक ने प्रारंभ करवाया था।

20. 'गुलामों का गुलाम' किसे कहा गया था?

(a) कुतुबुद्दीन ऐबक (b) मुहम्मद गोरी (c) बलबन (d) इल्तुतमिश

स्पष्टीकरण: इल्तुतमिश को मध्यकालीन भारतीय इतिहास में 'गुलामों का गुलाम' कहा जाता है, क्योंकि इल्तुतमिश ऐबक का खरीदा हुआ गुलाम था और कुतुबुद्दीन ऐबक मोहम्मद गोरी का गुलाम (दास) था।

21. मुहम्मद गोरी की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारतीय प्रांतों पर शासन किया एवं एक राजवंश की स्थापना की, जिसका नाम था—

(a) ऐबक वंश (b) गुलाम वंश (c) सल्तनत वंश (d) (b) एवं (c) दोनों

स्पष्टीकरण: गोरी की मृत्यु के बाद 1206 ई. में ऐबक द्वारा स्थापित राजवंश को प्रारंभिक इतिहासकारों और जनसामान्य द्वारा 'गुलाम वंश' नाम दिया गया, यद्यपि बाद में इसके लिए 'मामलूक' शब्द स्वीकार किया गया।

22. कुतुबुद्दीन ऐबक को दासता से मुक्ति कब प्राप्त हुई?

(a) 1206 ई. में (b) 1207 ई. में (c) 1208-09 ई. में (d) 1210 ई. में

स्पष्टीकरण: गज़नी के नए सुल्तान गयासुद्दीन महमूद (गोरी के भतीजे) द्वारा ऐबक को 1208-09 ई. में विधिवत रूप से 'दास्य मुक्ति पत्र' और सुल्तान के राजसी चिह्न प्रदान किये गए थे।

23. कुतुबुद्दीन ऐबक ने किस स्थान से शासन का संचालन किया?

(a) दिल्ली (b) लाहौर (c) अजमेर (d) मुल्तान

स्पष्टीकरण: ऐबक ने अपने संपूर्ण शासनकाल (1206-1210 ई.) में लाहौर को ही केंद्र बनाकर सल्तनत के शासन का संचालन किया था।

24. मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक को दफनाया गया था---

(a) दिल्ली में (b) रावलपिण्डी में (c) इस्लामाबाद में (d) लाहौर में

स्पष्टीकरण: ऐबक का मकबरा लाहौर (वर्तमान पाकिस्तान) के अनारकली बाज़ार के पास स्थित है। पोलो खेलते समय 1210 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद उसका शव लाहौर में ही दफनाया गया था।

25. दिल्ली सल्तनत का पहला संप्रभु (वैधानिक) या प्रभुत्वसंपन्न शासक था--

(a) कुतुबुद्दीन ऐबक (b) इल्तुतमिश (c) आरामशाह (d) नासिरुद्दीन महमूद

स्पष्टीकरण: ऐबक दिल्ली सल्तनत का संस्थापक तो था, लेकिन वह वैधानिक सुल्तान नहीं था। इल्तुतमिश ने खलीफा से अधिकार पत्र प्राप्त किया और दिल्ली को स्थायी राजधानी बनाया। इसीलिए उसे दिल्ली सल्तनत का पहला संप्रभु और प्रभुत्वसंपन्न शासक माना जाता है।

संदर्भ पुस्तकें (Suggested Reference Books):

1. चंद्र, सतीश, मध्यकालीन भारत: राजनीति, समाज और संस्कृति (1200-1526), ओरिएंट ब्लैकस्वैन, नई दिल्ली, (2007)।
2. सिंह, उपेंद्र, प्राचीन एवं पूर्व-मध्यकालीन भारत का इतिहास, पियर्सन इंडिया, नई दिल्ली, (2016)।
3. हबीबुल्ला, ए.बी.एम., भारत में तुर्की राज्य की नींव (The Foundation of Muslim Rule in India), सेंट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद, (1961)।
4. वर्मा, हरिश्चंद्र, मध्यकालीन भारत (भाग-1: 750-1540 ई.), हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, (1992)।
5. शर्मा, एल. पी., मध्यकालीन भारत का इतिहास (1000-1707 ई.), लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, (2018)।
6. NCERT, भारतीय इतिहास के कुछ विषय (भाग-2), कक्षा 12, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, (2020)।